समान नाम वाले रागों के विविध स्वरूपों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड विश्वविद्यालय)
दयालबाग़, आगरा, संगीत-विषय में पीएच. डी. की
उपाधि हेतु प्रस्तुत
शोध-प्रबन्ध की
रूपरेखा

शोधकर्त्री

मोनिका गुप्ता

शोध-निर्देशक

डॉ. गौतम तिवारी
संगीत-विभाग (गायन)

संगीत-विभाग, कला-संकाय
दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड विश्वविद्यालय)
दयालबाग,आगरा -282005

2023

भूमिका-

संगीत एक समृद्ध एवं वैभवशाली कला है जो आदिकाल से मानव के हृदय में वांछित भाव उत्पन्न करने का सशक्त माध्यम रहा है। हमारा भारतीय संगीत अत्यंत प्राचीन तथा विशाल है जिसमें दो संगीत पद्धतियां प्रचलित हैं, उत्तर भारतीय संगीत पद्धति तथा दक्षिण भारतीय संगीत पद्धति। उत्तर भारतीय संगीत पद्धति में शास्त्रीय संगीत के अन्तर्गत रागों का विशेष महत्व है। रागों को ही शास्त्रीय संगीत का आधार माना जाता है।

राग मूलतः संस्कृत भाषा का शब्द है जिसका उद्गम 'रन्ज' धातु से हुआ। जिसका अर्थ है रंजन करना। अतः जिसमे रंजन करने की क्षमता हो वह राग है। राग की उत्पत्ति से यह स्पष्ट है कि रागों में रंजकता का होना अनिवार्य है।

राग शब्द का जिस संदर्भ में हम आज प्रयोग करते हैं उसका सर्वप्रथम उल्लेख मतंगकृत 'बृहदेशी' ग्रन्थ में प्राप्त होता है, उन्होंने राग की परिभाषा कुछ इस प्रकार दी है-

"स्वरवर्ण विशेषण ध्वनिभेदेन वा पुनः ।।
रंज्यते येन यः कश्चित् स रागः संताम् ।।

अर्थात् –

विशिष्ट स्वर वर्ण (गान क्रिया) से अथवा ध्वनि भेद के द्वारा जो जन रंजन में समर्थ है वह राग है। मतंग के पूर्व भी रागों का उल्लेख हमें ऐतिहासिक ग्रन्थ भरतमुनि कृत ‘नाट्यशास्त्र’ में प्राप्त होता है, परन्तु भरतमुनि ने ‘राग’ शब्द के स्थान पर जाति गायन का उल्लेख किया है। प्राचीन समय में राग के स्थान पर जाति गायन प्रचलित था अतः इन्हीं जातियों से राग की उत्पत्ति मानी गई।

राग एक ऐसी स्वरबद्ध रचना है जो विशिष्ट स्वर समूहों से बनती है। कुछ विशिष्ट स्वरों के उतार-चढ़ाव तथा स्वरों के छोटे-छोटे स्वर समुदायों से इनका स्वरूप होता है। राग सुनने में रंजक होते हैं तथा अपनी मधुरता से मानव के हृदय का स्पन्दन करते हैं।

राग शास्त्रीय संगीत का आधार है तथा शास्त्रीय संगीत नियमों में बंधा हुआ संगीत है जिसके कारण रागों में भी विशेष नियमों का पालन किया जाता है। किसी भी राग के अपने कुछ नियम होते हैं जैसे इनमें लगने वाले स्वरों

के रूप, आरोह् अवरोह्, राग के विशिष्ट स्वर प्रयोग, विशिष्ट उच्चार, स्वरों के अल्पत्व बहुत्व वादी संवादी, पूर्वांग प्रधान अथवा उत्तरांग प्रधान थाट, रागांग समप्रकृति रागों से भिन्नता गायन समय इन सर्वमान्य नियमों को राग के अध्ययन, शिक्षण-प्रशिक्षण तथा प्रदर्शन के समय विशेष महत्व दिया जाता है। रागों से जुड़े यह विशिष्ट तत्व रागों के अध्ययन को गहन और गूढ़ बनाने के साथ-साथ शोध के लिए विस्तृत पृष्ठभूमि का भी निर्माण करते हैं।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों के स्वरूप से संबंधित अनेक विविधताएं मिलती है। कुछ राग ऐसे हैं जिनके स्वर प्रयोग तो समान हैं परंतु नामों में भिन्नता मिलती है। उदाहरण के लिए राग भीम तथा राग गावति एवं राग भिन्न षड्ज तथा राग कौशिक ध्वनि। इसके पूर्णतः विपरीत कुछ ऐसे भी राग हैं जिनके नाम तो समान हैं परंतु स्वर प्रयोग संबंधी स्वरूप पूर्णतः भिन्न है। उदाहरण के लिए राग चंद्रकौंस अनेक स्वर स्वरूपों के साथ गाया जाता है। रागों में इस प्रकार की विविधताओं के अनेक आधार हो सकते है।

प्राचीन समय में गुरू-शिष्य परम्परा के अन्तर्गत संगीत की शिक्षा वाचिक रूप से दी जाती थी। वाचिक परम्परा में किसी भी कला के विकास में क्वचित भिन्नता आ जाना स्वभाविक है जिसके कारण कलांतर में विविधताएं पनपी| यह विविधताएं घराना परम्परा के आधार पर भी दिखाई पड़ती है। किसी विशेष घराने में किसी राग को उस घराने की परम्परा के अनुसार गाया बजाया जाता है। यह भी रागों में विविधताओं का आधार हो सकता है।

थाटों और अंगों के आधार पर भी रागों में विविधताएँ होती है, जैसे किसी विशिष्ट राग को दो अलग थाटों से गाया जाना उदाहरणतः राग विभास को भैरव और मारवा दोनों थाटों से गाते- बजाते है। इसी प्रकार राग ललित को भी पूर्वी और मारवा दोनों थाटों से गाया बजाया जाता है।

इस प्रकार ऐसे अनेक राग है जो समान नाम के होते हुए भी अपने चलन व थाटों के आधार पर एक दूसरे से भिन्न हो जाते हैं। इस श्रेणी में राग दुर्गा, गौरी, सुघराई, भटियार आदि राग मुख्य हैं।

रागों के स्वरूपों में ये विविधताएं किन कारणों से अस्तित्व में आई यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न है जिसका उत्तर जानने की आवश्यकता है। इन राग स्वरूपों का परस्पर तुलनात्मक तथा विश्लेषणात्मक अध्ययन, राग के लुप्तप्रायः स्वरूपों को प्रकाश में लाना एक शोध का विषय है।

अपने इस शोध विषय से सम्बन्धित तथा रागों की विविधताओं एवं राग सम्बन्धी विशिष्टताओं का अध्ययन और जानकारी प्राप्त करने हेतु सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण किया गया।

शोधप्रबन्ध-

क्रसं	शोधकर्ता एवं वर्ष	शोध विषय	विश्वविद्यालय का नाम	निष्कर्ष
1.	तर्जनी हिराणी- 2018-2021	उत्तर हिन्दुस्तानी शास्त्रीय गायन के मारवा थाट के अंतर्गत समाविष्ट रागो का विशिष्ट अध्ययन	महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय ऑफ बड़ौदा	अध्ययन में संगीत के उदभव, विकास और शास्त्रीय संगीत की गायन शैलीयों पर प्रकाश डाला गया है साथ ही थाट राग पद्धति पर विस्तृत रूप से कार्य किया गया है. जिसमें मारवा थाट जन्य रागों का विस्तारपूर्वक अध्ययन और प्रचलित एवं अप्रचलित रागों का वर्णन, रागों के विभिन्न रसयुक्त बंदिशों पर अध्ययन प्राप्त होता है।
2	स्वाति कौशिक, 2018	हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में राग ध्यान परम्परा का विकास एवं वर्तमान सन्दर्भ में औचित्य-एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	दिल्ली विश्वविद्यालय	अध्ययन में राग की अवधारणा, रागों के काल्पनिक स्वरूपों, राग ध्यान, परम्परा एवं रागों का सौन्दर्य आदि को विस्तारपूर्वक अध्ययन किया गया है।
3	नीरा जैन, 2016	हिन्दुस्तानी संगीत मे खमाज एक अध्ययन (थाट,राग व अंग) के परिपेक्ष्य में	राजस्थान, विश्वविद्यालय	अध्ययन में थाट की उत्पत्ति ग्रन्थकारों द्वारा खमाज थाट की व्याख्या की गई है। खमाज थाट द्वारा जनित प्रचलित 18 रागों का स्वरूप बंदिशें तथा अप्रचलित 93 रागों का परिचय और स्वरूपों का विस्तारपूर्वक अध्ययन प्राप्त होता है साथ ही अन्य विधाओं में खमाज थाट की प्रासंगिकता के विषय में भी विवरण प्राप्त होते हैं।
4	गौरी भट्ट 2009	रागों के गाये गये भिन्न-भिन्न स्वरूपों का तुलनात्मक अभ्यास	श्रीमति नाथी बाई दामोदर ठाकरसी महिला विद्यापीठ, मुम्बई	अध्ययन में शास्त्रीय संगीत के अन्तर्गत कुछ चयनित रागों के भिन्न-भिन्न स्वरूपों तथा उनका विवरण प्राप्त होता है साथ ही कुछ अप्रचलित एवं मिश्र रागों का उल्लेख भी किया गया है।
5	सोनिया शर्मा, 2008	हिन्दुस्तानी संगीत में एक या एक से अधिक विकृत स्वरों के दोनों रूप वाले रागों का विवेचनात्मक अध्ययन।	पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़	अध्ययन में रागों की ऐतिहासिकता उत्पत्ति एवं उनके क्रमिक विकास का विवरण प्राप्त होता है तथा स्वरों के दोनों रूप में आने वाले रागों की स्वरावलियां एवं उनका विस्तारपूर्वक अध्ययन किया गया है जिसमे कुछ प्रचलित और अप्रचलित चयनित रागों का विवेचन किया गया है|
6	शिखा	कुछ विदेशी ग्रन्थकारों	छत्रपति शाहो जी	अध्ययन में राग-संगीत के विषय में

	पाण्डेय, 2005	द्वारा हिन्दुस्तानी राग एवं रागों के स्वरूपों की व्याख्या 1970 से 2000 तक-एक विश्लेषणात्मक अध्ययन।	महाराज विश्वविद्यालय कानपुर	उसके उदभव विकास और परिभाषाओं के साथ कुछ विदेशी ग्रन्थकारों के विचार रागों के रस एवं भावों की चर्चा की गयी है। साथ ही विदेशी ग्रन्थकारों का भारतीय संगीत के क्षेत्र में योगदान एवं भारतीय संगीत को विदेशों में लोकप्रियता दिलाने का विस्तारपूर्वक अध्ययन प्राप्त होता है।

पुस्तकें:

क्र.स.	नाम	विषय	प्रकाशक व प्रकाशन
1.	डॉ. रेनू जैन	स्वर और राग	कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।
2	डॉ. सुनंदा पाठक	हिन्दुस्तानी संगीत में राग की उत्पत्ति एवं विकास	राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
3	पं० रामाश्रय झा (रामरंग)	"अभिनव गीताजली(भाग-1,2,3,4)	संगीत सदन प्रकाशन, साउथ मलाका इलाहाबाद
4	डॉ. ज्योति मिश्रा	"हिन्दुस्तानी संगीत में रागांग"	कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली
5	डॉ. उमा गर्ग	"राग विश्लेषण संयुक्त भाग 1-2	संजय प्रकाशन, नई दिल्ली।
6	डॉ. सरिता निगम	"हिन्दुस्तानी संगीत में राग वर्गीकरण"	कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली
7	गणेश प्रसाद शर्मा	"राग प्रवीण"	कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली

पत्रिकाएँ –

1. "उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत का रागाधार थाट अथवा रागांग एक प्रश्नचिन्ह अंजलि- गिलोत्रा , संगीत कार्यलय, हाथरस, अंक-6 वर्ष जून 2012 "
2. "राग गौरी" (भैरव थाट) मोहित कुमार , संगीत कार्यालय, हाथरस, अंक-3 मार्च, 2001
3. "राग देवगिरि" डॉ सुलभ नि. ठकार, संगीत कला विहार, जनवरी, 1994.
4. भारतीय राग संगीत की अनमोल संपदा श्री बा० कासलीकर, संगीत कला विहार अंक-5 फरवरी, 1988

उपर्युक्त शोध प्रबन्धों, पुस्तकों एवं सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण से यह ज्ञात होता है कि रागों की ऐतिहासिकता, उनके भिन्न-भिन्न स्वरूपों तथा कतिपय अप्रचलित रागों के तुलनात्मक अध्ययन से सम्बन्धित कार्य

हुये हैं परन्तु उत्तर भारतीय संगीत पद्धति में कई राग ऐसे हैं जिनके नाम समान होते हुए भी उनके विविध स्वरूप प्राप्त होते हैं। इन विविध स्वरूप के अस्तित्व के कारकों का अध्ययन, उनके तुलनात्मक तथा विश्लेषणात्मक अध्ययन संबंधी कार्य दृष्टिगत नहीं होता।

उपरोक्त तत्वों के आधार पर इस विषय का गहन तथा विस्तृत अध्ययन हेतु तथा इन रागों के सांगीतिक तत्वों को सूक्ष्म रूप से सीखने, समझने एवं प्रकाश में लाने हेतु शोधार्थी ने शोध कार्य के लिए निम्नलिखित विषय का चयन किया है।

समस्या कथन –

"समान नाम वाले रागों के विविध स्वरूपों का विश्लेषणात्मक अध्ययन"

अध्ययन की आवश्यकता –

उत्तर भारतीय संगीत पद्धति में रागों के विविध स्वरूप विद्यमान है, परन्तु कुछ राग ऐसे भी है जो एक दूसरे के पूरक भी है भावार्थ की उनका ढाँचा (आरोह-अवरोह) समान है परन्तु वास्तव में वे अपना अलग-अलग व्यक्तित्व रखते है । वहीं कुछ राग ऐसे भी हैं जिनके नामों में समानता एवं स्वरूपों मे अनेक विविधताएं मिलती हैं। रागों में यह विविधताएं प्राचीन समय से चलती आ रही हैं। इन रागों में वैविध्य का कारण गुरुमुखी संगीत शिक्षा, जन संचार के माध्यम की कमी, भिन्न-भिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में विकसित हुआ संगीत तथा कलाकारों की अपनी निजी अभिव्यक्ति हो सकती है।

रागों में इन विविधताओं का कारण समझने हेतु रागों की ऐतिहासिकता की पृष्ठभूमि को समझना आवश्यक है। जिससे उनके विविध स्वरूपों के नेपथ्य की पृष्ठभूमि का विश्लेषण किया जा सके।

प्रस्तावित शोधकार्य की आवश्यकता रागों में आयी इन विविधताओं को सीखने, समझने एवं जानने में है। जिससे समान नाम वाले रागों के प्रचलित एवं अप्रचलित स्वरूपों को उजागर किया जा सके जो किसी कारणवण प्रचार में कम है एवं घरानागत शिक्षण परम्परा के अन्तर्गत भी आयी विविधताओं का कारण, उनके विविध स्वरूपों को प्रकाश में लाने हेतु इसका गहन एवं विस्तारपूर्वक अध्ययन करने की आवश्यकता है|

अध्ययन का महत्व

प्रस्तावित शोधकार्य रागों के विविध स्वरूपों को प्रचार में लाने एवं उनकी विशिष्टताओं और विश्लेषण पर आधारित होगा। यह शोधकार्य रागों की विविधताओं में एक नवीन क्षेत्र को प्रतिपादित करने में सहायक सिद्ध होगा जिससे आने वाले शोधार्थियों को इस सामग्री से भविष्य में अत्यन्त लाभ मिलेगा और इस क्षेत्र में शोध के नवीन आयाम भी प्रशस्त होंगे।

अध्ययन के उद्देश्य –

1. रागों के इतिहास एवं विकास का अध्ययन।

2 एक ही राग के विविध स्वरूपों तथा पृष्ठभूमि का अध्ययन।

3. भिन्न परम्पराओं में विकसित हुए सामान नाम वाले रागों का विश्लेषण करना।

4. भिन्न थाट/ मेल अथवा अंग से उत्पन्न हुए समान नाम वाले रागों के विविध स्वरूपों का विश्लेषण करना।

5. रागों के अप्रचलित तथा अल्प लोकप्रिय स्वरूपों का विश्लेषणात्मक अध्ययन कर उनके स्वरूप को प्रकाश में लाना।

अध्ययन का परिसीमांकन –

प्रस्तुत शोधकार्य की समय सीमा को ध्यान में रखते हुए शोधकत्री अपने शोधकार्य के अन्तर्गत लगभग 25 रागों के विविध स्वरूपों का अध्ययन करेगी।

अध्ययन के स्त्रोत

प्रस्तावित शोधकार्य को संचालित करने हेतु विभिन्न पुस्तकालयों, ग्रन्थों, पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं, इन्टरनेट, वीडियो, धवन्यंकित सामग्री, साक्षात्कार, कलाकारों एवं विद्वानों के विचार-विमर्श की सहायता से किया जायेगा|

अध्यायों का विभाजन –

प्रथम अध्याय – भारतीय संगीत का इतिहास वैदिक संगीत से ख्याल तक.

द्वितीय अध्याय - राग के विविध तत्व.

तृतीय अध्याय - उत्तर भारतीय "राग संगीत" की घरानागत विशेषताएं.

चतुर्थ अध्याय - समान नाम वाले रागों के घरानागत विविध स्वरूप.

पंचम अध्याय – समान नाम वाले रागों के थाट तथा रागांग जनित विविध स्वरूप.

निष्कर्ष –

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची -

शोध प्रबन्ध

(1). "रागों के गाये गये भिन्न-भिन्न स्वरूपों का तुलनात्मक अभ्यास" गौरी भट्ट श्री मती नाथी बाई दामोदर ठाकरसी महिला विद्यापीठ, मुम्बई 2009

(2). "कुछ विदेशी ग्रन्थकारों द्वारा हिन्दुस्तानी राग एवं रागों के स्वरूपों की व्याख्या 1970 से 2000 तक-एक विश्लेषणात्मक अध्ययन" : शिखा पाण्डेय, छत्रपति शाहो जी महराज विश्वविद्यालय, कानपुर, 2005

(3). "हिन्दुस्तानी संगीत में एक या एक से अधिक 'विकृत स्वरों के दोनो रूप वाले रागों का विवेचनात्मक अध्ययन" सोनिया शर्मा , पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़, 2008

(4) उत्तर हिन्दुस्तानी शास्त्रीय गायन के मारवा थाट के अन्तर्गत समाविष्ट रागों का विशिष्ट अध्ययन: तर्जनी चन्द्रकांत हिराणी, महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय ऑफ' बडौदा, 2018-2021

(5). हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में राग-ध्यान परंपरा का विकास एवं वर्तमान सन्दर्भ में औचित्य-एक विश्लेषणात्मक अध्ययन, स्वाति कौशिक, दिल्ली विश्वविद्यालय, 2018

(6). उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में राग वर्गीकरण की परंपरा (प्राचीन काल से लेकर वर्तमान समय तक प्रचलित विधियों का विवेचनात्मक अध्ययन): प्रियंका काशी विश्वविद्यालय, 2019

(7) हिन्दुस्तानी संगीत में खमाज : एक अध्ययन (थाट , राग व अंग के परिप्रेक्ष्य में) : नीरा जैन , राजस्थान विश्वविद्यालय, 2016

पत्र –पत्रिकाएं

(1) "उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत का रागाधार थाट अथवा रागांग एक प्रश्नचिन्ह् अंजलि- गिलोत्रा , संगीत कार्यलय, हाथरस, अंक-6 वर्ष जून 2012 "

(2) "राग गौरी" (भैरव थाट) मोहित कुमार , संगीत कार्यालय, हाथरस, अंक-3 मार्च, 2001

(3) "राग देवगिरि" डॉ सुलभ नि. ठकार, संगीत कला विहार, जनवरी, 1994.

(4) भारतीय राग संगीत की अनमोल संपदा श्री बा० कासलीकर, संगीत कला विहार अंक-5 फरवरी, 1988

"पुस्तके"

(1) डॉ रेनु जैन, "स्वर और राग" कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स , नई दिल्ली.

(2) डॉ सुनंदा पाठक , "हिन्दुस्तानी संगीत में राग की उत्पत्ति एवं विकास" राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली.

(3) पं० रामाश्रय झा "अभिनव गीताजंली" (रामरंग), भाग-1,2,3,4 प्रकाशन, प्रकाशक संगीत सदन, साउथ मलाका, इलाहाबाद.

(4) डॉ ज्योति मिश्रा ," हिन्दुस्तानी संगीत में रागांग" कनिष्क पब्लिशर्स", नई दिल्ली.

(5) डॉ. सरिता निगम "हिन्दुस्तानी संगीत में राग वर्गीकरण" कनिष्क पब्लिशर्स, नई दिल्ली

(6) डॉ. उमा गर्ग, "राग विश्लेषण" संयुक्त भाग 1-2 संजय प्रकाशन, नई दिल्ली।

(7) गणेश प्रसाद शर्मा "राग प्रवीण" कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली

<u>वेबसाइट</u>

- https://www.sargambook.com
- https://www.raag.hindustani.com
- https://www.Swarganga.org.
- https://www.Sodhganga.com